चौधरी PHOTOSTAT

"I don't love studying. I hate studying. I like learning. Learning is beautiful."

"An investment in knowledge pays the best interest."

Hi, My Name is

राजनीति विज्ञान

IAS

Jia Sarai New Delhi-16
Mob. 9818909565

Political Theory

विचारधारा

विश्व को देखने का दृष्टिकोण, और मापके विश्वासों का संग्रह है। जिसके द्वारा राजनीतिक क्रियाओं या कार्यों को प्रेरणा दी जाती है। विचार धारा का सबसे पहला प्रयोग फ्रांस के डी॰ ट्रेसी ने किया था, डी॰ ट्रेसी इसे जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान जैसा बनाना चाहते थे, परन्तु वे ऐसा नहीं कर पाये, लेकिन इसका प्रयोग आगे चलकर व्यापक रूप मे होने लगा।

Action oriented political theory वे सिद्धांत या आदर्श जिन्हें व्यावहारिक रूप मे लागू कर लिया जाता है उसे विचारधारा कहा जाता है।

उदारवादी विचारधारा

1. उदारवाद का अभिप्राय एवं इसके मूल तत्व,
2. उदारवाद के विकास के चरण,
3. नव-उदारवाद बनाम समुदाय वाद,
4. उदारवाद बनाम बहुसंस्कृति वाद,
5. उदारवाद बनाम नारीवाद,
6. क्या उदारवाद ने विचारधाराओं के संघर्ष को जीत लिया है (उदारवाद बनाम मार्क्सवाद)

Jia Sarai New Delhi-16
Mob. 9818909565

उदारवादी विचारधारा का आरंभ 17वी शताब्दी में हुआ। इसके पिता जॉन लॉक है। इस विचारधारा का आगमन आधुनिक युग के प्रारंभिक समय में हुआ जो मध्यकाल के अंत के दौर के समय में हुआ।

मध्यकाल में विद्यमान स्थिति

ईश्वर पर ज्यादा विश्वास

पोप व राजा का आधिपत्य

सामंतवादी व्यवस्था विद्यमान थी

व्यक्ति

उदारवाद की शुरुवात पितृसत्तात्मक सत्ता के अभाव से हुआ, लॉक ने कहा ईश्वरीय सत्ता से ज्यादा बेहतर पितृसत्तात्मक सत्ता है। लॉक ने कहा शासन वही करेगा जिसे आम जनता की सहमति प्राप्त हो।

- इन्होंने राज्य के सीमित होने पर बल दिया और अहस्तक्षेप वाली सरकार सीमित सरकार के कार्य :-
  - विधि व्यवस्था बनाये रखना
  - बाह्य आक्रमणों से नागरिकों की रक्षा करना।

अहस्तक्षेप वाली सरकार
- समझौते की स्वतंत्रता
- पितृसत्तात्मक सत्ता का अभाव

सीमित सरकार को पुलिस स्टेट, चौकीदारी राज्य, आदि नकारात्मक उदारवादी कहा जाता है।

- विधि का शासन, संविधान का शासन उदारवाद की मूल विशेषता है क्योंकि इनके द्वारा व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधा नहीं होगी यहां व्यक्ति को ज्यादा महत्व दिया जाता है और साथ ही सभी व्यक्तियों में सामंजस्य दिलाने के लिए सहिष्णुता को आवश्यक माना है।

- उदारवादी विचारधारा व्यक्तिवादी विचारधारा है। ये तार्किकता एवं विवेक पर विशेष बल प्रदान करते हैं।
- उदारवाद से ही लोकतंत्र की नींव पड़ी।
- उदारवादी स्वतंत्रता को परिभाषित करते हुये कहते हैं कि व्यक्ति को आर्थिक क्षेत्र में खुला छोड़ देना चाहिए, राज्य का हस्तक्षेप आर्थिक क्षेत्र में नहीं होगा।

1. पितृसत्तात्मक सत्ता का अभाव,
2. सीमित शासन (विधि एवं संविधान का शासन)
3. सहिष्णुता को आवश्यक मानना
4. तार्किक एवं विवेक पर बल
5. आर्थिक क्षेत्र में अहस्तक्षेपकारी

उदारवाद के विकास के चरण :-

1. उदारवाद का प्रथम चरण :-

व्यक्तिवाद

हॉब्स — स्वेच्छाचारी राजा का समर्थन

स्पेंसर — राज्यविहीनता

उदारवादियों ने इनके बीच की व्यवस्था को लिया, स्वतंत्रता स्पेंसर से तथा सीमित राज्य हॉब्स से। प्रत्येक उदारवादी व्यक्तिवादी होगा, लेकिन प्रत्येक व्यक्तिवादी उदारवादी नहीं होगा।

1. उदारवाद का प्रथम चरण :- नकारात्मक उदारवाद, शास्त्रीय, प्रारंभिक उदारवाद :-

⇓

- ① राज्य के नकारात्मक कार्य, व्यक्तियों की सुरक्षा करना,
- ② उदारवादी मानते हैं राज्य एक आवश्यक बुराई है। क्योंकि स्वतंत्रता पर अंकुश लग जाता है।

3. अणुवादी समाज है। (समाज सिर्फ व्यक्तियों का समूह है)
4. उदारवादी बाजारवादी व्यवस्था मे विश्वास करते है।
5. स्वतंत्रता प्राप्त हुई होगी लेकिन नकारात्मक स्वतंत्रता।
6. मूल प्रतिपादक – जॉन लॉक, बेंथम, एडम स्मिथ।

उदारवादियों के अनुसार –

व्यक्ति ———— राज्य का सम्बंध
व्यक्ति को प्राथमिकता [illegible] क्योंकि राज्य <u>सीमित, [illegible] व पुलिस राज्य</u> है।

व्यक्ति ———— समाज का सम्बंध (केवल अणुवादी समाज की कल्पना। उदारवाद के अनुसार

राज्य ———— बाजार का सम्बंध (<u>एडम स्मिथ</u>

उदारवाद का व्यावहारिक प्रयोग अमेरिका के जेफरसन और मेडीसन द्वारा किया गया।

(मिल) <u>दूसरा चरण :-</u>

रॉयल कमीशन की रिपोर्ट 1851 में आई। ~~इस रिपोर्ट मे कहा गया~~ कि उदारवादियों से ने कहा कि सभी को स्वतंत्रता के लिए खुला छोड़ देना चाहिए जिसका इस रिपोर्ट में खण्डन किया गया।

मिल के अनुसार – <u>राज्य के कार्य</u> (सकारात्मक रूप मे) <u>(कोई राज्य) कल्याणकारी कार्य</u>

ऐच्छिक कार्य – शिक्षा का विकास, स्वास्थ्य, पेंशन, कार्य के घण्टे निर्धारित करना, कार्य की बेहतर परिस्थितियों का निर्माण करना।

अनिवार्य कार्य – विधि व्यवस्था का निर्माण करना।

मानवाधिकार

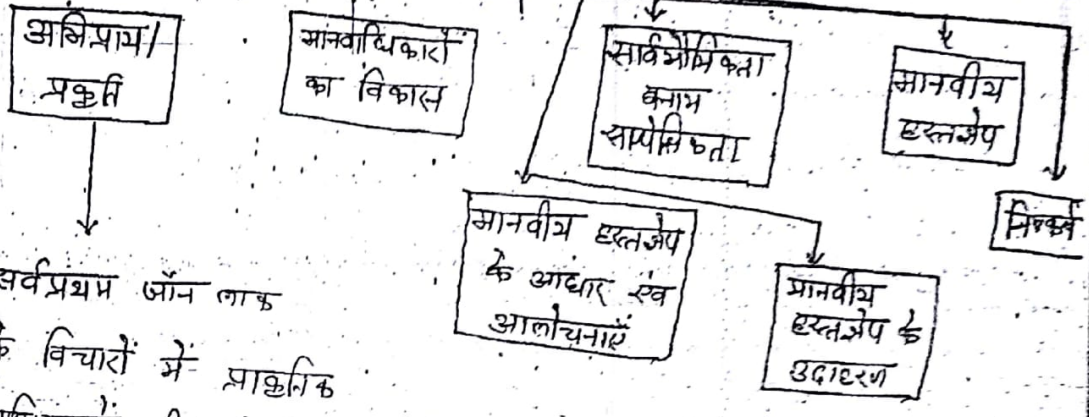

सर्वप्रथम जॉन लाक के विचारों में प्राकृतिक अधिकारों की संकल्पना आई।

↓

→ मानव जन्म के साथ ही कुछ प्राकृतिक प्राप्त होते हैं या प्राकृतिक अधिकारों की संकल्पना आधुनिक संकल्पना है। लॉक के संकल्पना में जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति को अधिकार पाई जाती है लॉक ने नैतिक रूप में मानव को समान माना।

↓

फ्रांसीसी एवं अमेरिकी क्रांति में इन अधिकारों को सर्वोच्च मिला। क्योंकि मानव स्वतंत्र जन्मा है इसलिए मानवीय अधिकार जन्मजात है।

→ लॉक के प्राकृतिक अधिकार को सैद्धांतिक आधार अमेरिकी क्रांति में प्राप्त हुआ। इसके बाद जैसे-2 लोकतंत्र का विकास, संविधान के शासन का निर्माण तथा विधि के अनुसार शासन प्रणाली आई तब इन अधिकारों को वैधानिक अधिकार में बदल गई।

↓

ये मूलतः मानवाधिकार ही थे। क्योंकि ये मानव के लिए ही थे।

→ अधिकार के प्रथम चरण।

① जीवन, स्वतंत्रता, उपासना के अधिकार
↓
सिविल अधिकार थे।

→ शासन प्रणाली के निर्माण का अधिकार, सरकार के निर्माण की अधिकार
↓

② राजनीतिक अधिकार (~~द्वितीय चरण~~)
↓
बेंथम के विचारों में पाया गया।
↓
ये अधिकार मूलतः व्यक्ति को राजनीतिक अधिकार में भाग लेने के लिए प्राप्त होता है।

→ अधिकारों के द्वितीय चरण:

A. सामाजिक, शैक्षिक अधिकार
B. जीवन की मूलभुत आवश्यकताओं का अधिकार
C. आर्थिक अधिकार भी प्राप्त हुए।
D. गरीबी, अज्ञानता, बेरोजगारी एवं भुखमरी उन्मूलन से का अधिकार। [ग्रीन के विचार]

⇒ अधिकारों के तृतीय चरण:

(१) सांस्कृतिक अधिकार
↓
[भीखू पारिक, विल किमलिका]
↓
अल्पसंख्यकों के लिए अधिकार
↓
भाषा, जीवन रक्षा, जीवन शैली का अधिकार।
लिपि एवं संस्कृति बजाए रखने का अधिकार

→ ~~सुदृढ़ता~~ सुदृढ़ता का अधिकार

↓

तीसरे दुनिया के लोगों को कुछ विशेष अधिकार प्राप्त होने चाहिए। सामूहिक सामाजिक -आर्थिक प्राप्त हो जिससे उनका समग्र विकास हो सकें।

↓

(iii) <u>पर्यावरणीय अधिकार</u>

⇒ 10.Dec 1948 में U.N.O के मंच से पहली बार मानवाधिकारों की घोषणा की गई। पहली बार सार्वभौमिक रूप में घोषणा हुई। महासभा द्वारा घोषित अधिकार नैतिक थे। क्योंकि ये राष्ट्र - राज्य पर बाध्यकारी नही थे। ये अधिकार सार्वभौमिक इसलिए था कि ये विश्व के सभी मानव को मानव होने के नाते प्राप्त था।

↓

मानव किसी भी मूल के हो। श्वेत - अश्वेत, हिन्दू - मुस्लिम या किसी भी संप्रदाय का व्यक्ति को प्राप्त था।

↓

→ ~~न्यूरेनबर्ग~~ ट्रायल (जर्मनी)

↓

इसमें राज्य के कर्मियों को मानवाधिकार के उल्लंघन के लिए दोषी ठहराते हुए सजा प्रदान की गई थी।

⇒ मॉरिस क्रैस्टन ने सामाजिक - आर्थिक अधिकार पर पर ही सवाल उठाया। क्योंकि सभी व्यक्तियों को समान सामाजिक आर्थिक अधिकार कैसे उपलब्ध करावाया जायेगा।

(7)

2002.

Q. "आज के नैतिक दावे कल के मानवाधिकार बन जाते हैं" 20वीं सदी में मानवाधिकारों के अंतर्राष्ट्रीय संरक्षण की दिशा में किए गए प्रयासों का ~~सव~~ विवरण दीजिए।

मानवाधिकार का विकास अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में :-

↓

10. Dec, 1948 का घोषणा पत्र

↓

(i) जैसे ही अधिकार / घोषणा आया सबसे पहले सऊदी अरब ने इस पर आपत्ति जताई। क्योंकि यह पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य के लिए ठीक है।

↓

अंतःकरण का अधिकार

↓

इसकी भूमिका ही पाश्चात्य है

(ii) दक्षिण अफ्रीका - रंगभेद नीति व्याप्त थी।

↓

~~सच्च~~ राष्ट्र - राज्य संप्रभु है

(iii) U.S.S.R - स्टालिन ने इस प्रश्न उठाए।

↓

ये अधिकार मूलतः बुर्जुआ अधिकार है

↓

यह मानव का अधिकार नहीं है व्यक्ति का अधिकार। इसे हम तब तक स्वीकार नहीं कर सकते जब तक इसमें सामाजिक आर्थिक अधिकार सम्मिलित नहीं किया जाता है

Note :- नैतिक रूप में ये अधिकार मानवीय, आदर्शीय, व्यापक थे व्यावहारिक कम थे।

(Q)

प्लेटो के वाक्य :- व्याख्या कीजिए। (200 शब्द) 3

(a) 1 "जब तक दार्शनिक नरेश नहीं हो जाते या इस संसार के राजा और राजकुमार दर्शन की भावना की शक्ति से ओतप्रोत नहीं हो जाते, तब तक नगर- राज्यों को बुराई से कभी भी राहत नहीं मिलेगी।" (2000)

(b) 2 "केवल वही व्यक्ति जिसको सभी प्रकार के ज्ञान में रुचि है, और इसे प्राप्त करने के लिए जिज्ञासा के साथ अपने आप को समर्पित कर देता है, दार्शनिक कहलाने योग्य है।"

(c) 3 "राज्यों की ~~परि~~ परेशानियों या मानवता की परेशानियों का अन्त नहीं होगा जब तक राजनैतिक शक्ति व दर्शन एक ही हाथ में नहीं आ जाते।" (1985)

(d) 4 ~~जब~~ "कोई भी विधि या अध्यादेश ज्ञान से अधिक शक्तिशाली नहीं होता है।" (1987, 1993)

Jia Sarai New Delhi-16
9818909565

प्लेटो ने शिक्षा के द्वारा एक अच्छे व्यक्ति या सद्गुणी व्यक्ति के निर्माण का आधार रखा और उसके अनुसार एक अच्छे व्यक्ति और अच्छा राज्य परस्पर पूरक है। उसका प्रसिद्ध कथन है कि "राज्य का निर्माण ओक के वृक्ष से नहीं होता बल्कि व्यक्तियों के चरित्र से होता है।" शिक्षा का मूल उद्देश्य एक सद्गुणी व्यक्ति का निर्माण करना है। प्लेटो के अनुसार "एक अच्छे व्यक्ति व अच्छे चिकित्सक में अन्तर होता है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का समाज में कर्तव्य निर्धारित किया जाता है। उसके अनुसार समाज तीन वर्गों 'उत्पादक वर्ग', 'सैनिक वर्ग', 'शासक' (दार्शनिक राजा) से मिलकर बनता है। उसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का कार्य निर्धारित है:-

- वासना प्रधान व्यक्ति उत्पादक कार्य में संलग्न होंगे।
- साहस प्रधान व्यक्ति सैनिक कार्य में होंगे,
- विवेक प्रधान व्यक्ति दार्शनिक राजा होंगे,

समाज के इन तीनों वर्गों का निर्धारण शिक्षा प्रणाली द्वारा किया गया, प्राथमिक स्तर की शिक्षाओं को प्राप्त करने वाले व्यक्ति उत्पादक होंगे। द्वितीयक स्तर तक शिक्षा पूर्ण

करने वाले व्यक्ति सैनिक होंगे, और तीनों वर्गों की शिक्षा पूर्ण करने वाले दार्शनिक राजा होंगे।

प्लेटो के 'रिपब्लिक' में शिक्षा का महत्व स्पष्ट रूप में प्रकट होता है। और उसने विधि या कानून का उल्लेख नहीं किया, तथा इसमें दण्ड का उल्लेख भी नहीं पाया जाता है। दण्ड के स्थान पर साम्यवादी विचार का प्रयोग किया जाये।

प्लेटो का यही विचार उसे आधुनिक राजनैतिक चिन्तकों से भिन्न बनाता है। क्योंकि आधुनिक राजनैतिक चिन्तकों के अनुसार राज्य का मूल आधार विधि व्यवस्था मानी जाती है, और दण्ड के अनुसार व्यक्ति के व्यवहारों का निर्णय किया जाता है।

शिक्षा का चरण:- प्लेटो के चिन्तन का मूल आधार 'बार्कर' के अनुसार:- एक अच्छा व्यक्ति कैसा होना चाहिए, एक अच्छा राज्य कैसा होना चाहिए, और एक अच्छे व्यक्ति व राज्य में सम्बन्ध कैसा होना चाहिए, और इस सन्दर्भ में प्लेटो ने शिक्षा का महत्व प्रतिपादित किया और उसने शिक्षा प्रणाली का भी विस्तार से उल्लेख किया, उसने शिक्षा सिद्धान्त का निर्माण 'एथेंस' एवं 'स्पार्टा' में प्रचलित शिक्षा प्रणालियों के गुणों को स्वीकार करके किया तथा दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया, एथेंस की शिक्षा प्रणाली में साहित्य, व्यायाम व संगीत पर बल दिया जाता था, साहित्य के अध्ययन को विद्यार्थियों को विधि व नीतिशास्त्र की शिक्षा प्राप्त होती थी, एथेंस में व्यक्ति बीस वर्षों तक शिक्षा प्राप्त करते थे। प्लेटो के अनुसार एथेंस की शिक्षा प्रणाली में व्यक्तियों के मानसिक विकास पर अत्यधिक बल दिया गया, किन्तु एथेंस में शिक्षा प्राप्त करना व्यक्ति का निजी दायित्व था, शिक्षा राज्य के द्वारा प्रदान नहीं की जाती थी।

प्लेटो के अनुसार एथेंस पर अज्ञानी व अयोग्य व्यक्तियों का शासन था, उसने एथेंस की शिक्षा प्रणाली देखते हुए अपनी प्रणाली पर इन बिंदुओं पर बल दिया

* शिक्षा राज्य द्वारा दी जानी चाहिए,
* शिक्षा का मूल उद्देश्य अच्छे नागरिक का निर्माण करना है।
* शिक्षा के द्वारा दार्शनिक राजाओं का निर्माण होगा व सर्वोच्च राज्य का सृजन होगा,

प्लेटो के विचारों पर स्पार्टा के शिक्षा पद्धति का भी प्रभाव पड़ा। यहां शिक्षा राज्य के द्वारा दी जाती थी, सात वर्ष की आयु से ही बच्चों को राज्य के अधिकारियों को सौंप दिया जाता था, एवं शिक्षा का मूल उद्देश्य युवक व युवतियों को कठोर शारीरिक प्रशिक्षण देकर वीर योद्धा बनाना था। जिससे वे स्पार्टा की रक्षा कर सकें। प्लेटो के अनुसार स्पार्टा की शिक्षा प्रणाली में अनेक विसंगतियाँ थीं जो शिक्षा का पाठ्यक्रम संकुचित एवं एकांगी था, शारीरिक और सैनिक शिक्षा पर ही बल दिया गया जबकि साहित्यिक शिक्षा, मानसिक व बौद्धिक प्रशिक्षण की पूर्णतः अवहेलना की गयी।

प्लेटो ने मनोवैज्ञानिक रूप में शिक्षा के तीन चरणों का निर्माण किया। युवावस्था में आत्मा, कल्पना व भावना प्रधान होती है इसलिए शिक्षा के प्राथमिक चरण में प्लेटो ने व्यायाम व संगीत को अत्यधिक महत्व दिया। उसके अनुसार व्यायाम के द्वारा शरीर स्वस्थ होगा व संगीत के द्वारा आत्मिक गुणों का विकास होगा, अतः प्लेटो की शिक्षा प्रणाली में शारीरिक व मानसिक दोनों पक्षों पर बल दिया गया। प्रथम चरण की शिक्षा (10-20) वर्ष निर्धारित की गयी। प्लेटो ने व्यायाम का अर्थ व्यापक रूप में वर्णित किया, और उसके अनुसार व्यायाम में शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए 'आहारशास्त्र' व 'चिकित्साशास्त्र' का ज्ञान दिया जायेगा, उसके अनुसार शरीर इतना स्वस्थ्य हो कि बिमार न हो सके अतः उसके आदर्श राज्य में चिकित्सकों का कोई स्थान नहीं है। उसने यहां तक कहा कि बिमारी, आलस्य व विलासिता का परिणाम है।

उसके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य नैतिक दृष्टि से चरित्र निर्माण करना भी है जिसका अभिप्राय है कि

विवेकशील, प्रशिक्षित शासक से है जिसे विचारों का ज्ञान प्राप्त हो और वह शासन कला में सम्मिलित हो। प्लेटो का शासन विवेक पर आधारित है, ---।

और दार्शनिक राजा का निर्माण शिक्षा द्वारा किया गया। उसके अनुसार राजा का ज्ञान व विवेक किसी भी विधि से ज्यादा महत्वपूर्ण होता है और प्लेटो ने विवेक व ज्ञान को महत्व देते हुए मान्यताओं, परम्पराओं व ~~कथन~~ प्रथाओं को अस्वीकृत कर दिया। उसके अनुसार परम्परायें व प्रथायें अज्ञान की प्रतीक है।

प्लेटो का प्रसिद्ध कथन है कि कोई भी धोबी, मोची या नाई राजा नहीं हो सकता है उसके अनुसार "शासन एक कला है और जिस प्रकार चिकित्सक बनने के लिए विशेषज्ञता चाहिए वैसे ही विशेषज्ञता राजा बनने के लिए चाहिए। एक अच्छा चिकित्सक शरीर की सभी बिमारियों को दूर कर देता है जबकि राजा समाज की सभी समस्याओं का निराकरण करता है"। प्लेटो के अनुसार यूनानी राज्यों की मूल समस्या का कारण अविवेकपूर्ण व अज्ञानी शासक थे, प्लेटो ने ज्ञान व शासन को एक दूसरे से आपस में मिला दिया। इसलिए उसका प्रसिद्ध कथन है कि "राजा दार्शनिक होना चाहिए अथवा राजा में दार्शनिकता का भाव होना चाहिए।" इससे स्पष्ट है कि प्लेटो ने राजतंत्रीय शासन प्रणाली का समर्थन किया।

06/06/09 सेबाइन के अनुसार :- प्लेटो की शासन प्रणाली प्रबुद्ध अधिनायकवादी है, क्योंकि उसके अनुसार शासन राजा के विवेक द्वारा होगा, विधि के द्वारा नहीं, उसके अनुसार शासन व राजा सत्य का अन्वेषक है, उसे तृष्णा और भौतिक विषयों को प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती है। राजा को न्याय, सौन्दर्य व परम सत्य का ज्ञान होता है, उसने दार्शनिक राजा की संकल्पना का समर्थन करते हुए लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का पूर्ण खण्डन किया है। तत्कालीन समय में एथेंस में लोकतंत्र, स्पार्टा में अल्पतन्त्र और सिरेक्यूज में निरंकुश शासन था और उसके अनुसार इन सभी शासन प्रणालियों में शासक अज्ञानी थे

संरचनात्मक यथार्थवाद/नव-यथार्थवाद

⇓

मुख्य प्रतिपादक केनेथ वाल्ट्ज

यथार्थवाद :-

→ राज्य केन्द्रित अंतर्राष्ट्रीय राजनीति
↓
→ राष्ट्रीय हित
↓
- राष्ट्रीय सुरक्षा
↓
- शक्ति के द्वारा

Photostat
Sarai New Delhi-16
Mob. 9818908565

⇒ मार्गेनथाऊ की मान्यता।
↓

A मानव के वस्तुनिष्ठ

B. भारत - नेपाल

C. शक्ति का मूल अभिप्राय सैन्य शक्ति है

नव - यथार्थवाद

A. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की संरचना अराजकतापूर्ण होती है।
⇓
वैश्विक संस्था / नियंत्रणकारी संस्था का अभाव।

B. चीन - वियतनाम
↓
सुरक्षा के लिए।

C. शक्ति अनेक अवयवों का योग होता है।

परंपरागत यथार्थवाद एवं नव-यथार्थवाद में अंतर :-

नव-यथार्थवाद का प्रतिपादन केनेथ वाल्ट्ज द्वारा किया गया। इनका विचार अमेरिका की व्यवहारवादी क्रांति से प्रभावित है। क्योंकि व्यवहारवादी क्रांति के परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धांतों को भी व्यवहारिक एवं वस्तुनिष्ठ बनाने का

प्रयत्न किया गया। इसलिए यह माना जाता है कि सीमांतक यथार्थवाद का निर्माण केनेथ वाल्ट्ज ने किया व्यवस्था उपागम से प्रभावित होकर किया। संरचनात्मक यथार्थवादियों ने पारंपरिक यथार्थवादियों के मानवीय दृष्टिकोण (Humanistic) को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया। अतः वाल्ट्ज ने मानव स्वभाव और राज्य के नैतिकता के पहलू को पूर्णतः उपेक्षित किया।

परंपरागत शास्त्रीय यथार्थवादियों ने सरकार एवं उसके नेतृत्व की व्यक्तिनिष्ठ (Subjective) दृष्टिकोण पर अत्यधिक बल दिया। जबकि वाल्ट्ज ने वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण बल दिया। परंपरागत यथार्थवादियों ने मानवीय स्वभाव को महत्वपूर्ण माना। जो व्यवस्था का निर्माण एवं संचालन करते हैं उन्होंने विदेश नीति के निर्माण में राज्य नेतृत्व पर अत्यधिक बल प्रदान किया। वाल्ट्ज के अनुसार विदेश नीति का निर्माण एवं नियंत्रण अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था या संरचना के द्वारा होता है। इसके अनुसार अंतर्राष्ट्रीय संरचना के द्वारा नेतृत्व पर अनेक प्रतिबंध आरोपित होते हैं इसलिए नेतृत्व के विकल्प सीमित होते हैं और वे अंतर्राष्ट्रीय संरचना द्वारा निर्धारित होते हैं।

परंपरागत यथार्थवाद मूलतः आगमनात्मक (Inductive) सिद्धांत है इसलिए इसके लिए मार्गेन्थाउ ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का विश्लेषण राज्य की अंतःक्रियाओं एवं कार्यों द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया। इसलिए परंपरागत यथार्थवाद को

[redacted]

मार्गेन्थाऊ का यथार्थवाद :-

⇓

आलोचना

- प्राथमिक प्रकार
  - ↓ विचारक के विचारों में प्रतिरोध / विरोधाभास
- द्वितीयक प्रकार
  - ↓ दूसरे विद्वानों के द्वारा

⇓

(A) बहुत सारे विचारक मार्गेन्थाऊ को यथार्थवादी नहीं मानते हैं

⇓

क्योंकि मार्गेनथाऊ एक पूर्व मान्यता के अनुसार अपनी सिद्धांत की परिकल्पना की है

↓

⇒ यथार्थवादी का मत है कि जैसा विश्व है उसी प्रकार से व्याख्या करनी चाहिए। जबकि मार्गेन्थाऊ पूर्व मान्यता को लेकर चलते हैं

(B) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को हमेशा संघर्ष के रूप में चित्रित किया तो फिर I.R में सहयोग की बात क्यों की।

⇓

(i) U.N.O द्वारा शांति (परिवर्तन के द्वारा)

(ii) निशस्त्रीकरण द्वारा शांति

(iii) कूटनय / राजनय के द्वारा शांति

⇒ मार्गेन्थाऊ ने पहले दो प्रकार की मान्यता को अस्वीकार कर दिया है

⇛

C.) मार्गेन्थाऊ शक्ति अद्वैतवाद के शिकार हैं [Power Monism]

⇓

राजनीति में केवल शक्ति की बात करते हैं

D.) मानव स्वभाव को नकारात्मक रूप में चित्रित किया है

↓

मानव ~~स्वभा~~ स्वभाव का चित्रण "एकांगी" रूप में किया है।

यथार्थवाद का व्यवहारिक पक्ष :-

A. भूमंडलीकरण - आर्थिक अंतर्निर्भरता बढ़ती जा रही है

B. आर्थिक शक्ति को प्राथमिकता

C. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, E.U, क्षेत्रीय आर्थिक संगठन

⁂ शीतयुद्धोत्तर विश्व में यथार्थवाद की मान्यता पर सीधे प्रश्न उठाए गए। क्योंकि 1990 के बाद विश्व में आर्थिक ~~नि~~ अंतर्निर्भरता में अपार वृद्धि हुई। वस्तु, सेवा एवं वित्त के आदान-प्रदान में बढ़ोतरी हुई। और विश्व में ~~क~~ Hard power के बजाए Soft power को वरीयता प्रदान की गई। USSR के विघटन और शीत युद्ध की समाप्ति को यथार्थवाद की अवनति / ह्रास के रूप में भी देखा गया। क्योंकि महाशक्तियों के मध्य सहयोग पर बल दिया गया। क्षेत्रीय आर्थिक संगठनों का निर्माण हुआ। और -6-

Read

प्रस्तावना

चौधरी PHOTOSSTAT
Jia Sarai New Delhi-16
Mob. 9818909565

प्रस्तावना संविधान के आदर्शों, उद्देश्यों का वर्णन
संविधान का मूल दर्शन अन्तर्निहित है।

प्रस्तावना भारतीय संविधान की मूल कुंजी है जिसमें संविधान के मूलभूत आदर्शों, उद्देश्यों का वर्णन है। प्रस्तावना में वर्णित ये आदर्श विधान संविधान सभा द्वारा 22 जनवरी 1947 को उद्देश्य प्रस्ताव के रूप में स्वीकार किए गए थे जिनमें भारत में सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय स्थापित करने का संकल्प लिया गया था। प्रस्तावना में संविधान का मूल दर्शन अन्तर्निहित है। यह भारतीय संविधान की जन्मकुण्डली है।

चौधरी PHOTOSSTAT
Jia Sarai New Delhi-16
Mob. 9818909565

कार्ल फ्रेडरिक - प्रस्तावना द्वारा जनमत प्रकट होता है जिससे संविधान अपनी शक्ति प्राप्त करता है।

फ्रांसीसी क्रांति / + रूसी क्रांति
स्वतं., समान. / सामाजिक, आर्थिक न्याय

कार्ल फ्रेडरिक के अनुसार प्रस्तावना के द्वारा वह जनमत प्रकट होता है जिससे संविधान अपनी शक्ति प्राप्त करता है। नेहरू के अनुसार प्रस्तावना में दो महान क्रांतियों के आदर्शों का वर्णन है। प्रस्तावना में फ्रांसीसी क्रांति का दर्शन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व का वर्णन है। रूसी क्रांति के सामाजिक आर्थिक न्याय के आदर्शों को भी सम्मिलित किया गया है।

शक्ति का स्रोत - हम भारत के लोग. संविधान का निर्माण जनप्रतिनिधियों के द्वारा ही हुआ है।

प्रस्तावना में संविधान की शक्ति के स्रोत का वर्णन है जिसमें स्पष्ट कहा गया है कि हम भारत के लोगों ने संविधान का निर्माण किया और उसे स्वयं स्वीकार किया। अतः संविधान किसी विशेष समूह या व्यक्ति द्वारा निर्मित नहीं है। अपितु इसका निर्माण जनता के प्रतिनिधियों के द्वारा किया गया।

प्रस्तावना में भारतीय संविधान के मूलभूत आदर्शों का वर्णन है। डॉ. अम्बेडकर के शब्दों में स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना हो चुकी है और संविधान का मूलभूत उद्देश्य सामाजिक आर्थिक लोकतंत्र को स्थापित करना है। ग्रेनविल ऑस्टिन के अनुसार भारतीय संविधान मूलतः सामाजिक क्रांति का दस्तावेज है और प्रस्तावना में वर्णित निम्न लिखित आदर्श इसी की ओर संकेत करते हैं

A. सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय

B. विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, और उपासना की स्वतंत्रता

C. प्रतिस्थिति और अवसर की समानता

D. सभी नागरिकों में बंधुता की भावना का विकास और व्यक्ति की गरिमा के साथ राष्ट्र की एकता अखण्डता की रक्षा करना

भारतीय संविधान के विभिन्न भागों में सामाजिक आर्थिक न्याय स्थापित करने के अनेक प्रावधानों का उल्लेख है। मूल अधिकार के भाग और निदेशक तत्वों के भाग में संविधान की अन्तरात्मा निहित है। इसके अतिरिक्त अनुसूचित जातियों और जनजातियों, पिछड़े वर्गों और महिलाओं के कल्याण के विशेष उपाय भी वर्णित हैं। इसीलिए प्रस्तावना को संविधान की जन्म कुण्डली भी कहा जाता है।

11.08.69

प्रस्तावना में वर्णित उपरोक्त आदर्शों को पूर्ण करने के लिए सरकार की प्रणाली का भी स्पष्ट वर्णन है। इस के अनुसार भारत संप्रभु, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य शासन के मूलभूत आधार स्वीकार किये गए। संप्रभु का अभिप्राय आन्तरिक रूप में सर्वशक्तिशाली और बाह्य रूप में स्वतंत्र है। 1947 में भारत ब्रिटिश साम्राज्य की अधीनता से मुक्त हो गया।

समाजवादी, पंथनिरपेक्ष (42 वां) 1976

1955 - आवडी अधिवेशन

समाजवादी और पंथनिरपेक्ष शब्द 42 वें संविधान संशोधन (1976) द्वारा जोड़ा गया। संविधान में समाजवाद का अर्थ स्पष्ट नहीं है। इसे स्पष्ट करते हुए 1955 के कांग्रेस के आवडी (TN) अधिवेशन में, स्पष्ट किया गया ~~किया~~ : समाजवाद का आशय सभी लोगों को जीवन की न्यूनतम सुविधाएँ प्रदान करना, अवसर की समानता और समाज में शोषण और विभेदों को समाप्त करते हुए समाज के समाजवादी ढाँचे का निर्माण करना। इन्दिरा गांधी के अनुसार हमारे समाजवाद का एक अलग रूप है। यह सोवियत संघ से भिन्न है और भारत में राष्ट्रीयकरण तभी किया जाएगा जब आवश्यकता होगी। केवल राष्ट्रीयकरण हमारे समाजवाद का अभिप्राय नहीं है। यह बिन्दु ध्यान देने योग्य है कि संविधान सभा में प्रो. के.टी. शाह ने सभा प्रस्तावना में समाजवाद शब्द जोड़ने का आग्रह किया था परन्तु डॉ. अम्बेदकर ने इसे अस्वीकृत कर दिया। उनके अनुसार समाजवाद

सोवियत समाजवाद से भिन्न

भारतीय संविधान में अन्तर्निहित है। इसलिए इसे 42 वें संविधान संशोधन द्वारा जोड़कर स्पष्ट बना दिया गया।

यह बिन्दु अत्यधिक दिलचस्प और उल्लेखनीय है कि पंथनिरपेक्षता शब्द को भी डॉ. आम्बेदकर ने संविधान सभा में प्रस्तावना में सम्मिलित करने से इनकार कर दिया था क्योंकि उनके अनुसार भारतीय संविधान में पंथनिरपेक्षता अन्तर्निहित है और प्रस्तावना में विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, आस्था और उपासना की स्वतंत्रता पहले ही अपनाया जा चुका है। इसलिए पंथनिरपेक्ष शब्द को जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। 42 वें संविधान संशोधन द्वारा इसे भी प्रस्तावना में सम्मिलित किया गया।

पंथनिरपेक्ष शब्द की परिभाषित नहीं है। सामान्यतः पंथनिरपेक्षता का आशय राज्य द्वारा सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान प्रदर्शित करना है। इसके अनुसार राज्य का कोई धर्म नहीं होगा अपितु धर्म व्यक्ति विशेष का होगा। अतः भारत में धर्म और राज्य के मध्य स्पष्ट विभाजन किया गया। इससे स्पष्ट है कि भारत जैसे विविधतापूर्ण और बहुलता वाले देश में सभी धर्मावलम्बियों का महत्व समान है।

समानता

समानता की संकल्पना राजनीतिक चिंतन में 'आधुनिक युग' की देन है। जिसको अनेक विचारधाराओं द्वारा भिन्न रूपों में परिभाषित किया गया है। इन भिन्नताओं के बावजूद समानता का मूल अभिप्राय 'अवसर की समानता' है। समानता की संकल्पना को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

Ⓐ कल्याण की समानता
Ⓑ संसाधनों की समानता
Ⓒ क्षमताओं की समानता

Ⓐ उपयोगिवादियों के विचारों में 'कल्याण के विचारों की समानता' की संकल्पना अन्तर्निहित है। 'बेन्थम' के अनुसार "अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख कल्याण है

PHOTOSSIGHT
Jia Sarai, New Delhi-16
Mob. 9818909565

क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति मूलतः अधिकाधिक सुख प्राप्त करने का इच्छुक होता है। और वह दुखों को कम से कम चाहता है।" अतः राज्य व सरकार के द्वारा व्यक्तियों के सुखवृद्धि के लिए अनेक सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती है।" इसीलिए 'बेंथम' के विचारों में कल्याणकारी राज्य के बीज विद्यमान है। और उनके अनुसार राज्य का मूल कार्य समाज में प्रचुरता का वृद्धि करना व सुरक्षा बनाये रखना है। और 'बेंथम' के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति द्वारा सुखों का निर्धारण स्वयं किया जाता है। इसलिए प्रत्येक वस्तु से व्यक्ति अलग अलग सुख प्राप्त कर सकते है।

(B) Equality of resources :-

इस दृष्टिकोण के मुख्य विचारक समर्थक 'जॉन रॉल्स,' 'रोनाल्ड डॉर्किन' व 'एरिक रोकोवस्की' है। इनके अनुसार आरंभिक स्थिति में व्यक्तियों के लिए संशाधनों का समान वितरण होना चाहिए। डॉर्किन के अनुसार वस्तुओं के वितरण की दो प्रक्रिया है। जिसमें

१. आकांक्षा या महत्वाकांक्षा के अनुसार,
२. बीमा योजना के अनुसार।

'डॉर्किन' ने अपना काल्पनिक विचार देते हुए कहा कि एक नये द्वीप पर संशाधनों का वितरण किस प्रकार आरंभिक रूप में समानता से किया जाये। डॉर्किन के अनुसार "आरंभिक स्थिति में यदि प्रत्येक व्यक्ति को यदि

समान संसाधन प्राप्त हो जायें, उसका प्रयोग वह प्रतिस्पर्धी बाजार में अपनी 'प्राथमिकता व इच्छा' के अनुसार अलग-अलग करेगा।"

- आरम्भिक स्थिति में संसाधनों के समान वितरण के बावजूद लोग अपने संसाधनों का प्रयोग भिन्न-2 तरीके से करते हैं। इसलिए आरम्भिक स्थिति के बाद यदि विषमता आती है तो इसका दायित्व राज्य व समाज का नहीं अपितु व्यक्ति के चयन का परिणाम है।

उन्होंने प्राथमिक स्थिति में संसाधनों के समान वितरण को मानते हुए भी प्राकृतिक रूप में 'अपंग' व्यक्तियों को संसाधनों के वितरण में प्राथमिकता दी, प्राकृतिक रूप में अपंग व्यक्तियों के लिए संसाधनों का समान आवंटन पर्याप्त नहीं है क्योंकि उनकी परिस्थितियाँ विषम हैं। इसलिए उन्हें आवंटन में अधिक से अधिक वस्तुएँ प्रदान करने की आवश्यकता है तभी उनका चयन सार्थक हो सकता है। डॉर्किन की इसी योजना को 'बीमा योजना' कहा जाता है, और उनके अनुसार समाज में कोई भी व्यक्ति प्राकृतिक रूप में अपंग हो सकता है। अतः पूरे समाज का यह दायित्व है कि वे ऐसे व्यक्तियों के लिए योगदान करें।

जॉन रॉल्स के विचारों में प्राकृतिक रूप में अपंग व्यक्तियों के हितों की रक्षा का प्रयास नहीं किया गया। रॉल्स ने विषमता को, 'आर्थिक, सामाजिक रूप में देखा, प्राकृतिक रूप में नहीं। उसके अनुसार "समाज में प्रतिभाशाली व्यक्तियों की सम्पत्ति का उपयोग न्यूनतम स्थिति में रहने वाले लोगों के कल्याण के लिए किया जा सकता है।"

रॉल्स के अनुसार समानता का मूल अभिप्राय अवसर की समानता है। उसके अनुसार "समानता, समाज से विभेदों को पूर्ण रूप में समाप्त करना नहीं है बल्कि उन विभेदों को बनाये रखना है, जिससे समाज के वंचित वर्गों का कल्याण हो। और उन विभेदों को पूर्णतया समाप्त किया जाना चाहिए जिससे वंचित वर्ग की स्थिति बेहतर हो।" व्यावहारिक रूप में रॉल्स ने कल्याणकारी राज्य के द्वारा और प्रगतिशील करारोपण के माध्यम से समाज के वंचितों का उत्थान करते हैं।

रॉल्स के अनुसार पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली में अवसरों की समानता स्थापित करना सम्भव है।

© Equality of capabilities:-

अमर्त्य सेन ने अपनी रचना 'Development As Freedom' में क्षमताओं की समानता का समर्थन किया, और उनके अनुसार "लोगों की क्षमताओं में वृद्धि करने का अभिप्राय जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।"

TH

RM

① परिवर्तनशील व्यवस्था (समय) के अनुसार,
② तार्किक होना,
③ अखिल भारतीय व्यक्तित्व
④ समाज के वंचित वर्गों के प्रति संवेदना,
⑤ व्यवस्था विरोधी नहीं होना चाहिए.

PHOTOSTAT
Jia Sarai New Delhi-16
Mob: 9818909565

6. लेखन क्षमता का विकास, सुस्पष्टता, भाषा सरल, वस्तुनिष्ठता, छोटे वाक्य व छोटे-छोटे शब्द, विश्लेषणात्मक (अपने शब्दों में व्याख्या)(कैसे कहा,), शब्दों की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।

कोठा - समाज की कमियों को कम करने में विश्वास.

Deepak Pandeya.

① तनाव मुक्त
②

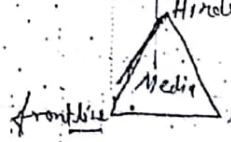

— Inter Relation

I Paper

'राजनीतिक सिद्धांत एवं भारतीय राजनीति'

10, 8, 4, 5, 3, 2, 6, 7, 9, 1.

1. पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन
2. राजनैतिक विचारधाराएं
3. समानता,
4. अधिकार
5. न्याय
6. ~~राजनैतिक सिद्धांत~~ (राज्य के सिद्धांत)
7. लोकतंत्र
8. शक्ति, प्राधान्य, विचारधारा एवं वैधता की अवधारणा
9. भारतीय राजनैतिक चिंतन
10. राजनैतिक सिद्धांत

एक व्यक्ति या एक वर्ग द्वारा दूसरे व्यक्ति या वर्ग में हस्तक्षेप न करना ही न्याय है।

शिक्षा : प्लेटो ने कहा कि शिक्षा तीन प्रकार की होती —

III शासक
↓
II सैनिक
↓
I उत्पादक

साम्यवाद —

सम्पत्ति नहीं होगी
↓
परिवार न होगा

— न्याय कर्तव्य पर आधारित था।

① समाज में कार्यों का विभाजन —— (श्रम विभाजन)
② कार्यों का विशेषीकरण —

प्लेटो के अनुसार इन दोनों बिन्दुओं के द्वारा समाज सम्पन्न ~~सम्पन्न~~ और समाज में न्याय की स्थापना की जा सकती है।

परम्परावादी — सोफिस्टों की न्याय की संकल्पनाओं का खण्डन :-

↓

		प्लेटो की न्याय कल्पना
भौतिकवादी	——	आदर्शवादी
व्यक्तिवादी	——	नैतिकवादी
'है' शब्द को प्राथमिकता	——	'चाहिए' शब्द को प्राथमिकता
① सत्य बोलना, ऋण चुकाना	—	न्याय आत्मा का गुण
② जैसे के साथ तैसा व्यवहार करना,	—	न्याय शाश्वत
शक्तिशाली का हित ही न्याय है।	—	~~सभी का हित~~ प्राकृतिक

(हाशिये पर: सेफेलस, पॉलीमार्कस, थ्रेसीमेकस)

बनाए रो नाजा

गुटनिरपेक्षता

(1)

PHOTOSTAT
...lia Sarai New Delhi-16
Mob. 9818909565

गुटनिरपेक्षता का अभिप्राय

आदर्श

गुटनिरपेक्षता तीसरी दुनिया की सामूहिक आवाज है। यह विश्व को लोकतांत्रिक बनाने की सार्थक माँग है। यह साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं रंग-भेदनीति को समाप्त करने का सामूहिक आंदोलन है। यह विश्व में एक नवीन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था के निर्माण की माँग है जिसमें संप्रभुता, स्वतंत्रता और राज्यों के मध्य समानता के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का संचालन होगा।

अपनाने के कारण

विगत 300 वर्षों की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्र राज्यों का केन्द्रीय महत्व बना रहा और महाशक्तियों के द्वारा अशक्त राज्यों पर विभिन्न प्रकार से प्रभुत्व स्थापित किया गया जिसे कभी pax britannica तो कभी pax americana और pax sovietica के आधार पर संचालित किया गया। प्रो० एम० एस० राजन के अनुसार गुटनिरपेक्षता का आशय अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का लोकतांत्रीकरण है। यह राज्यों का वह अधिकार है जिसके द्वारा ये स्वतंत्रता बनाए रखते हैं, विकास को प्राथमिकता देते हैं और गुटीय राजनीति से स्वयं को अलग रखते हैं।

5.10.09

IP का संचालन कैसे हो

गुटनिरपेक्षता का अभिप्राय संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्तर्राष्ट्रीय विधि के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का संचालन करना है क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति सदैव निरंकुशता के आधार पर संचालित हुई। प्रो० एम० एस० राजन के अनुसार विश्व राजनीति का पहला चरण सम्प्रभुता

का असल माना गया; दूसरे चरण में राष्ट्रवाद प्रभावी हुआ और तीसरा चरण में वैचारिक संघर्ष प्रभावी था। परन्तु विश्व में शक्ति राजनीति का प्रभाव सदैव बना रहा।

यह सच है कि सभी गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों ने स्वतंत्र और स्वायत्त नीतियों का प्रयोग नहीं किया। उदाहरण के लिए मिस्र और पाकिस्तान अमरीका के सामरिक गठबंधन के सदस्य बन गए, सऊदी अरब और वियतनाम ने अपनी भूमि पर महाशक्तियों के सैनिक अड्डों का निर्माण करवाया जबकि दूसरी ओर सिंगापुर, श्रीलंका और सुकर्णो के पश्चात् इण्डोनेशिया जैसे राज्य भी महाशक्तियों के साथ सैन्य रूप में बंध गया।

गुटनिरपेक्षता का आशय स्वतंत्र और स्वायत्त विदेशनीति का निर्माण, विश्व को शांतिपूर्ण बनाने का आन्दोलन और विश्व को गुटों से मुक्त करने का आन्दोलन है। गुटनिरपेक्षता का आशय विश्व के प्रत्येक मुद्दों पर उसके गुण और अवगुण के आधार पर सक्रिय सहभागिता है। अतः गुटनिरपेक्षता तटस्थता और अलगाववाद से भिन्न है।

गुटनिरपेक्ष राज्यों के मध्य विद्यमान भिन्नताओं से इसका महत्व कम नहीं होता क्योंकि इसका उद्देश्य एक न्यायपूर्ण लोकतंत्र की स्थापना करना है।

1961 के गुटनिरपेक्ष आंदोलन में सदस्यों को सम्मिलित करने के लिए निम्नलिखित मानकों (norms) का निर्माण किया गया —

1. सैन्य संगठनों का सदस्य न होना
2. सदस्य राष्ट्रों की भूमि पर विदेशी सैनिक अड्डों का न होना
3. महाशक्तियों के साथ द्विपक्षीय सैन्य संधि का अभाव
4. स्वतंत्र और स्वायत्त विदेशनीति
5. उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का विरोध

गुटनिरपेक्षता : आन्दोलन अथवा संस्थाकरण

गुटनिरपेक्षता मूलतः एक आंदोलन था जिसका उद्देश्य विश्व राजनीति को शक्ति संतुलन के बजाय न्याय और समता के आधार पर निर्मित करने का प्रयत्न किया गया। 1973 के अल्जीयर्स सम्मेलन में एक समन्वयकारी ब्यूरो की स्थापना हुई जिसके द्वारा इस आंदोलन को संस्थागत करने का प्रयत्न किया गया। 1976 के कोलंबो सम्मेलन में इसे और प्रभावी बनाने का प्रयत्न किया गया। इसमन्वयकारी ब्यूरो का कार्य निम्नलिखित था —

* संयुक्त राष्ट्र संघ में सदस्यों की संयुक्त गतिविधियों में समन्वय।
* किसी अन्तर्राष्ट्रीय संकटपूर्ण स्थिति पर विचार विमर्श करना।

* 1973 के अल्जीयर्स सम्मेलन में ही गुटनिरपेक्षता के स्थायी सचिवालय बनाने पर विचार विमर्श हुआ परन्तु गुटनिरपेक्षता का संस्थागतकरण नहीं हो सका और मूलतः आंदोलन ही बना रहा। इस आंदोलन, के द्वारा कई संस्थाओं को जन्म दिया गया। –

* G-77
  जी-77 के द्वारा (UNCTAD) का निर्माण हुआ।
* सूचना के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय समन्वय परिषद का निर्माण
* सूचना के लिए नई अन्तर्राष्ट्रीय सूचना व्यवस्था की मांग

पाश्चात्य दृष्टिकोण के अनुसार गुटनिरपेक्षता

पाश्चात्य विचारकों के अनुसार गुटनिरपेक्षता थोथी विचारधारा है यह अवसरवादी विचारधारा है जिसमें प्रत्येक राज्य अवसरवादी नीतियों का प्रयोग अपने हितों में वृद्धि के लिए करते हैं। जॉन फॉस्टर डलेस के अनुसार शीतयुद्ध के वैचारिक ध्रुवीकरण के युग में गुटनिरपेक्षता की संकल्पना निरर्थक है। अनेक पाश्चात्य विचारकों ने गुटनिरपेक्षता को तटस्थता के रूप में परिभाषित किया। कुछ अमेरिकी विचारकों ने इसे सोवियत संघ के खेमे का विस्तार कहा। इसीलिए पाश्चात्य विचारकों ने आरंभ से ही गुटनिरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता पर सवाल उठाए। इन विचारकों ने शीतयुद्ध में देतान्त के समय भी गुटनिरपेक्षता को अप्रासंगिक कहा और जब शीतयुद्ध की समाप्ति / सोवियत विघटन के स्वाभाविक रूप में गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता पर सवाल खड़े किए गए।